यूपी के नेम सिंह स्पाइस मनी अधिकारी बनकर यथास्थिति को चुनौती दे रहे हैं

लखनऊ। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल आबादी में 2.21 प्रतिशत यानी 2.68 करोड़ लोग किसी-न-किसी रूप में दिव्यांग हैं. सरकारी आंकड़ों के हवाले से रिक्रूटमेंट प्लैटफॉर्म, द्वारा उपलब्ध संख्या के अनुसार भारत में रोजगार योग्य आयु वर्ग में आने वाले अशक्तता से ग्रसित 1.34 करोड़ लोगों में से 34 लाख (लगभग 25 प्रतिशत) को रोगजार मिला हुआ है. दुर्भाग्य से, उनमें से अनेक को हितकर बुनियादी सुविधाओं की कमी, साक्षरता की कमी (विशेषकर ग्रामीण दिव्यागों में), कम वेतन और सबसे बढ़कर जिनके पास कुशलता है लेकिन आजीविका पाने में असमर्थ हैं, उनमें आत्मविश्वास की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है. वैश्विक महामारी के चलते स्थिति बदतर हो गई क्योंकि छोटे शहरों और गाँवों में जो लोक स्व-रोजगार में थे, उन्हें दुकान बंद करनी पड़ी या भारी घाटा उठाना पड़ा।